بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 25 अप्रैल 2025, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.

7वीं एवं 8वीं शताब्दी हिजरी के कुछ युद्धों एवं सैन्य अभियानों के परिपेक्ष में सीरत-ए-नबवी ﷺ का बयान।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-25.04.2025

محلہ احمدیہ قادیان پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

اما بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने के विभिन्न अभियानों की चर्चा हो रही है उनमें एक सरिय्या ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह फ़िदक की ओर का भी वर्णन मिलता है। हज़रत बशीर बिन सअद रज़ी. शअबान 7 हिजरी में 30 लोगों के साथ फ़िदक में बनू मर्रह की ओर गए। बनू मर्रह ने बशीर बिन सअद रज़ी. के समस्त साथियों को शहीद कर दिया। रसूलुल्लाह स. को जब इसकी सूचना मिली तो आप स. ने ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ी. को तय्यार किया तथा उनके साथ दो सौ सहाबियों को भिजवाया। इस अभियान में मुसलमानों को सफलता मिली तथा माले ग़नीमत भी प्राप्त हुआ।

फिर एक सरिय्या शजा बिन वहब है, यह सरिय्या रबीउल अव्वल 8 हिजरी में हुआ। इस सरिय्ये का विस्तृत विवरण इस प्रकार बयान हुआ है कि रसूलुल्लाह स. को निरन्तर सूचनाएं प्राप्त हो रही थीं कि सई नामक क्षेत्र से बनू हवाज़न इस्लाम के शत्रुओं की सहायता कर रहे हैं और मुसलमानों के दोस्त क़बीलों के लोगों को लूट कर जंगलों में छिप जाते हैं। रबीउल अव्वल के महीने 8 हिजरी में हुज़ूर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत शजा रज़ी. को 24 मुजाहिद देकर बनू हवाज़न को आधीन करने के लिए नियुक्त फ़रमाया, इनको बनू आमिर भी कहा जाता है। हज़रत शजा रज़ी. मुजाहिदों के साथ रात को यात्रा करते एवं दिन में छिपे रहते, यहाँ तक कि अचानक सुबह के समय बनू आमिर के सिर पर जा पहुंचे और उन पर आक्रमण कर दिया। हज़रत शजा रज़ी. ने अपने मुजाहिदों को आदेश दिया कि इनका पीछा न करें। उन्हें बड़ी मात्रा में ऊँट और बकरियां मिलीं जिन्हें वे हांक कर मदीने ले

आए और माले ग़नीमत के रूप में बाँट दिया। उनमें से हर एक व्यक्ति के हिस्से में पन्द्रह ऊँट आए, इस सरिय्ये में पन्द्रह दिन लगे।

इसके बाद एक सरिय्या कअब बिन उमैर गिफ़री का वर्णन है। यह सरिय्या 8 रबीउल अव्वल 8 हिजरी को हुआ। आप स. ने हज़रत कअब बिन उमैर रज़ी. के नेतृत्व में पन्द्रह सहाबा रज़ी. को ज़ाते अतलाह की ओर रवाना फ़रमाया जो क़ुरा नामक घाटी के पीछे था। जब ज़ाते अतलाह के निकट पहुंचे तो दुश्मन के एक जासूस ने उनको देख लिया और उसने तुरन्त ही अपने आदमियों को मुसलमानों की आने की सूचना दे दी, उन्होंने तय्यारी की एवं एक बड़ी सेना संगठित कर ली। सहाबा रज़ी. ने उन लोगों को इस्लाम की दावत दी, किन्तु उन्होंने इन्कार कर दिया और सहाबा रज़ी. पर तीर चलाना शुरू कर दिया। रसूलुल्ल्हा स. के सहाबियों ने उनकी इस हरकत को देखा तो उनके साथ घोर युद्ध किया, यहाँ तक कि सब लोग लड़ते लड़ते शहीद हो गए। इन सहाबियों में से एक सहाबी मृतकों में ज़ख़्मी अवस्था में थे, वे वहाँ से भाग निकले। एक रिवायत के अनुसार वे हज़रत कअब बिन उमैर स्वंय थे। अतएव लिखा है कि जब रात ठंडी हुई तो वे सवार होकर रसूलुल्लाह स. के पास गए और आप स. को इस घटना की सूचना दी। आप स. को यह ख़बर अत्यंत दुखद लगी, आँहज़रत स. ने उसी समय उनकी ओर एक सेना भेजने का निश्चय किया किन्तु फिर आप स. को पता चला कि वे लोग उस स्थान से हट कर किसी दूसरे स्थान पर चले गए हैं इस लिए आप स. ने इरादा बदल दिया।

मौता नामक युद्ध जमादिल ऊला 8 हिजरी अथवा सितम्बर 629 ई. में हुआ। मौता नामक स्थान शाम देश की धरती पर मदीने से लगभग 600 मील की दूरी पर स्थित था। इस युद्ध का कारण मुसलमानों के सन्देश वाहक हारिस बिन उमैर रज़ी. की दुखद शहादत थी जो आप स. के लिए अति कष्टदायक थी। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह स. ने ग़स्सान क़बीले के सरदार को जो रोम देश के शासन की ओर से बसरे का शासक था अथवा स्वंय रोम के राजा को पत्र लिखा। उस पत्र में समभवतः रोम के क़बीलों की शिकायत होगी कि वे मुसलमानों के विरुद्ध षड्यंत्र करते हैं तथा उन्होंने पन्द्रह मुसलमानों की निर्मम हत्या कर दी। यह पत्र हज़रत हारिस रज़ी. के द्वारा भिजवाया गया जो मौता नामक स्थान पर ठहरे, जहां ग़स्सान क़बीले का एक सरदार शुरहबील उन्हें मिला और उसने हज़रत हारिस रज़ी. को गिरफ़तार करके हत्या करवा दी। रसूलुल्लाह स. को जब हारिस रज़ी. की शहादत की सूचना मिली तो आप स. ने इस घटना तथा पिछली घटना के दंड के रूप में तीन हज़ार की सेना तय्यार करवाई और ज़ैद बिन हारसा रज़ी. को उसका अमीर नियुक्त फ़रमाया। आप स. ने फ़रमाया कि यदि ज़ैद शहीद हो जाएं तो हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब अमीर होंगे तथा यदि जाफ़र बिन अबी तालिब शहीद हो गए तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा अमीर होंगे और यदि अब्दुल्लाह बिन रवाहा भी शहीद हो गए तो मुसलमान जिसे चाहें अपना अमीर चुन लें।

नुमान नामक एक यहूदी वहाँ मौजूद था, उसने कहा कि ऐ अबू क़ासिम! यदि आप नबी हैं तो जिन जिन का आपने नाम लिया है, वे सब शहीद हो जाएँगे। फिर उसी यहूदी ने हज़रत ज़ैद रज़ी. से कहा कि ज़ैद! वसिय्यत कर लो, यदि मुहम्मद (रसूलुल्लाह स.) सच्चे नबी हैं तो तुम वापस लौट कर नहीं आ सकोगे। हज़रत ज़ैद रज़ी. ने कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद स. अल्लाह के सच्चे नबी हैं। जब आप स. अमीर नियुक्त फ़रमा रहे थे तो हज़रत जाफ़र रज़ी. ने निवेदन किया कि या

रसूलुल्लाह स! मुझे आशा न थी कि आप मुझ पर ज़ैद को अमीर नियुक्त फ़रमाएंगे। आप स. ने फ़रमाया कि तुम जाओ, तुम नहीं जानते कि क्या उचित है।

रसूलुल्लाह स. ने हज़रत ज़ैद रज़ी. को सफ़ेद झंडा दिया और हिदायत फ़रमाई कि हज़रत हारिस रज़ी. की शहादत के स्थान पर पहुँच कर लोगों को इस्लाम की दावत दें, यदि वे स्वीकार कर लें तो ठीक अन्यथा उनके विरुद्ध अल्लाह तआला से सहायता मांग कर युद्ध करें। रसूलुल्लाह स. ने इन लोगों को विदा करते हुए नसीहत फ़रमाई कि तुम्हें अल्लाह तआला का तक़वा धारण करने तथा अपने साथी मुसलमानों से भलाई करने की वसिय्यत करता हूँ, अल्लाह के नाम के साथ अल्लाह का इन्कार करने वालों से मुक़ाबला करो, न धोखा देना, न किसी का माल हड़पना, न किसी शिशु की हत्या करना, न किसी महिला न किसी वृद्ध की हत्या करना, न किसी खजूर के वृक्ष को काटना, न किसी अन्य वृक्ष को काटना तथा न किसी भवन को गिराना। फिर सेना के सेना पति को फ़रमाया कि जब तुम किसी मुशरिक से मिलो तो उसे तीन बातों की दावत देना, यदि वह उनमें से कोई बात भी मान ले तो उसे क़ुबूल कर लेना और उसे कोई कष्ट मत देना। उन्हें दावत देना कि वे अपने नगर से मुहाजिरों के नगर में चले जाएं। यदि वे इस प्रकार कर लें तो उन्हें बताना कि उनके लिए वही है जो मुहाजिरों के लिए है, और उन पर वही है जो मुहाजिरों के लिए है। यदि वे इन्कार कर दें तो उन्हें कहना कि वे मुसलमानों में से बादिया वालों की ओर जाएं, उनके लिए अल्लाह का वही आदेश होगा जो अन्य मुसलमानों के लिए है परन्तु उन्हें माले ग़नीमत तथा माले फ़े में से अंश नहीं मिलेगा, यहाँ तक कि वे मुसलमानों के साथ मिल कर जिहाद करें। यदि वे इसका भी इंकार कर दें तो उनसे जज़िया वसूल करना, यदि वे मान जाएं तो क़ुबूल कर लेना और उन्हें सताने से रुक जाना, यदि वे इसका भी इन्कार कर दें तो अल्लाह तआला से इनके विरुद्ध मदद मांगना और इनसे जिहाद करना। यदि तुम किसी क़िले अथवा नगर को घेर लो तथा वे तुम से अल्लाह और उसके रसूल का ज़िम्मा निश्चित करने का इरादा करें तो उनसे अल्लाह और उसके रसूल का ज़िम्मा निश्चित न करना

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला की हिकमत है कि यह घटना बिलकुल इसी तरह पूरी हुई। पहले हज़रत ज़ैद रज़ी. शहीद हुए, उसके बाद हज़रत जाफ़र रज़ी. ने सेना की कमान संभाल ली और वे भी शहीद हो गए, उसके बाद अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी. ने सेना का नेतृत्व संभाला और वे भी शहीद हो गए। संभावना थी कि सेना बिखर जाती, कि हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ी. ने कुछ मुसलमानों के कहने पर इस्लामी झंडे को पकड़ लिया और अल्लाह तआला ने उनके द्वारा मुसलमानों को विजय प्रदान की और वे कुशलता पूर्वक इस्लामी सेना को वापस ले आए।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि यह वर्णन अभी जारी है और आगे भी इन्शाल्लाह चलेगा, अभी मैं एक शहीद तथा कुछ मृतकों का वर्णन करूंगा और नमाज़ के बाद उनके जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाऊंगा।

1- मुकर्रम लईक़ अहमद चीमा साहब सुपुत्र मुकर्रम चौधरी नजीर अहमद चीमा साहब, इन्हें 18 अप्रैल को कराची में एक भीड़ ने हमला करके, ईंटें और पत्थर मार मार कर अत्यंत कष्ट देकर शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैही राजिऊन। शहीद की आयु 47 वर्ष थी, शहीद मरहूम एक वर्क-शाप चलाते थे और इनकी ईमानदारी के कारण इनका कारोबार काफ़ी उन्नति कर गया था। मरहूम

मूसी थे, अत्यंत कर्मठ जमाअती कार्य-कर्ता, नमाज़ और रोज़े के पाबन्द, तहज्जुद गुज़ार, मिलनसार, स्नेह करने वाले, अति वीर तथा दूसरों को साहस दिलाने वाले, ख़िलाफ़त से विशेष सम्बन्ध रखने वाले, ख़ुत्बा ध्यान पूर्वक सुनने वाले, जमाअती ड्यूटीज़ और मुक़दमों की पैरवी में अग्रसर एवं पेश होने के लिए हर दम तय्यार थे। शहादत की घटना से दो दिन पहले विरोधियों की ओर से अदालत में इन्हें धमकियां भी दी गई थीं। क़ुराने करीम से शहीद को अत्यधिक इश्क़ था। परिजनों में दो पत्नियां और सात बच्चे शामिल हैं, इनके अतिरिक्त बहिन और भाई भी हैं।

शहीद मरहूम के वर्णन के अंतर्गत हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि आज भी क़ुसूर के एक गाँव में एक युवा अहमदी की शहादत की सूचना मिली है, विस्तृत जानकारी अभी नहीं आई।
इसके बाद हुज़ूरे अनवर ने विरोधियों के लिए दुआ की, कि अल्लाह तआला इन दुष्टों की पकड़ के जल्द सामान करे, इनके लिए अब यही है कि اَللّٰھُمَّ مَزِّقْھُمْ کُلَّ مُمَزَّقٍ وَسَحِّقْھُمْ تَسْحِیْقًا

2- मोहतरमा अम्तुल मुसव्विर नूरी साहिबा पत्नी डाक्टर मसउदुल हसन नूरी साहब, मरहूमा पिछले दिनों वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैही राजिऊन। मरहूमा हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहब रज़ी. की पोती और हज़रत नवाब अम्तुल हफीज़ बेगम साहिबा रज़ी. की नवासी और मिर्ज़ा दाऊद अहमद साहब की बेटी थीं। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि मेरी चचेरी बहिन थीं। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसिया थीं। मरहूमा नमाज़ रोज़े की पाबन्द, संतोषी, सरल स्वभाव, विभिन्न धर्मों का अध्ययन करने वाली, पति का साथ देने वाली, धैर्य वाली, निष्ठावान दीन की सेवक, क़ुरआने करीम से मुहब्बत रखने वाली, निर्धनों की शुभचिन्तक, हज़रत मसीह मौऊद अलै. की पुस्तकों का अध्ययन करने वाली तथा वाक़फ़ीने ज़िन्दगी का सम्मान करने वाली महिला थीं।

मुकर्रम हसन सानो ग़उ अबू बकर साहब लोकल मुबल्लिग़ बर्कीना फ़ासो, आप 63 वर्ष की आयु में पिछले दिनों वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैही राजिऊन। मरहूम लोकल ज़बान में क़ुरआने करीम का दर्स दिया करते थे जो रेडियो पर प्रसारित होता था। मरहूम ने अलअज़हर यूनिवर्सिटी से शिक्षा प्राप्त कर रखी थी। मरहूम नेक, तबलीग़ का चाव रखने वाले, दलेर, अति उत्तम वक्ता, सम्बोधन कर्ता, क़ुरआने करीम से मुहब्बत रखने वाले, प्रसन्नचित इंसान थे। हुज़ूरे अनवर ने दुआ की, कि अल्लाह तआला ऐसी सेवा करने वाले जमाअत को सदेव प्रदान करता रहे।

ख़ुतबः के अन्त में हुज़ूरे अनवर ने समस्त मृतकों की मग़फ़िरत और दर्जों की बुलंदी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ، عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْکُمْ وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131